राष्ट्रदूत 06-5-2020

'लॉक डाउन में कृषि विद्यार्थी अपनी कार्य दक्षता को बढ़ाने का प्रयास करें'

उदयपुर, (कासं)। एमपीयूएटी उदयपुर के कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र सिंह राठौड ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को ऑनलाइन संबोधित किया। उन्होंने बताया कि लॉकडॉउन के बाद हम 17 मई तक तीसरे और संशोधित लॉक डाउन का पालन कर रहे हैं हालांकि हमारे देश में अनेक पश्चिमी देशों और अमेरिका की तुलना में कोरोना महामारी से बचाव के लिए बेहतर प्रयास किए गए हैं जिसके लिए हमारी सरकार, स्वास्थ्य कर्मी, सुरक्षाकर्मी एवं सफाई कर्मियों ने अतुलनीय एवं प्रशंसनीय योगदान दिया है।

उन्होंने कहा कि हमें सरकार द्वारा निर्देशित नियमों का अक्षरस: अनुपालन करना चाहिए। इसके लिए उन्होंने एसडीएम अर्थात सोशल डिस्टेंसिंग एवं मास्क तथा एचएम अर्थात हैंड एंड मास्क के बारे में बताते हुए कहा कि हमें सामाजिक दूरी बनाए रखने के साथ-साथ बाहर निकलने पर मास का प्रयोग करना चाहिए तथा नियमित रूप से साबुन से हाथ धोने चाहिए एवं चेहरे व आंख-नाक-कान इत्यादि पर हाथ नही लगाना चाहिए। उन्होने बताया कि इस लॉकडाउन पीरियड के दौरान हमारी सभी फैकल्टी एवं टीचर्स ने अपने अपने विभागाध्यक्ष एवं डीन्स के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है।

उदयपुर में एमपीयूएटी के कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र सिंह राठौड ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को ऑनलाइन संबोधित किया।

सभी फैकल्टी ने डिजिटल ऑनलाइन माध्यमों से अपनी कक्षाएं ली है तथा पिछले 15 दिनों में ही 56 से ज्यादा ई मैनुअल और ईकम्मैडियम तैयार कर विद्यार्थियों को डिजिटल रूप में उपलब्ध कराए हैं जिससे वह अपने घर पर ही समुचित रूप से अपना अध्ययन जारी रख सकते है। उन्होंने बताया कि उन्हें इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने फीडबैक दिया है की सामान्य दिनों में 4-5 घन्टे के बजाय वे अब 6से 7 घंटे नियमित अध्ययन कर रहे हैं तथा डिजिटल माध्यम से यह अध्ययन और भी आसान हो गया है। प्रोफेसर राठौड ने बताया कि इस लॉकडॉउन पीरियड के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा 4000 से अधिक मास्क तैयार किए जा रहे हैं जो कि विद्यार्थियों के आने पर उन्हें उपलब्ध कराए जाएंगे।

उन्होंने नियमित शिक्षा एवं अनुसंधान तथा प्रसार कार्यों के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों का आभार व्यक्त किया तथा विद्यार्थियों से अपेक्षा की कि वे इस लॉकडॉउन पीरियड के दौरान अपनी कार्य दक्षता एवं सॉफ्ट स्किल्स को बढाने का प्रयास करेंगे तथा नवाचार के साथ क्रियात्मक बनेंगे और अपने उपजाऊ दिमाग को स्टार्टअप व उद्यमिता के विकास की ओर आमुख करेंगे। उन्होंने बताया कि भारत मे कृषि का उज्जवल भविष्य है तथा आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था प्राप्त करने के लिए कृषि उत्पादन, खाद्य-प्रसंस्करण, फल एवं उद्यानिकी उत्पादन, हाइड्रोपोनिक्स, वर्टिकल फार्मिंग एवं एक्वापोनिक्स व कृषि मे डिजिटल तकनिकों जैसी नवीन कृषि पद्धतियों में रोजगार की विपुल संभावनाएं है उन्होंने बताया कि इस डिजिटल वर्ल्ड में एक्सटेंडेड, ऑगमेंटेड एवं वर्चुअल रियलिटी की बहुत संभावनाएं हैं इसके माध्यम से हम खेत में प्रयोगशाला जैसी एवं प्रयोगशालाओं में खेत जैसी स्थितियां बना कर अनुसंधान कर सकते है।

उन्होंने कहां की जैसे ही यह लॉकडॉउन खोला जाएगा हम प्राथमिकता से अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों की परीक्षाएं आयोजित करने का प्रयास करेंगे तत्पश्चात प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के लिए परीक्षा की अवस्था की जाएगी उन्होंने इसके लिए विद्यार्थियों से धैर्य बनाए रखने का आह्वान किया। इस ऑनलाइन व्याख्यान के आयोजन के लिए उन्होंने सीटीआई कम्प्युटर विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. नवीन चौधरी एवं अधिष्ठाता सीटीआई डॉ. अजय शर्मा का धन्यवाद ज्ञापित किया इस अवसर पर उन्होंने विद्यार्थियों के जिज्ञासाओं का उत्तर भी दिया।

प्रातःकाल 6 मई, 2020

एमपीयूएटी ने 4000 से अधिक मास्क बनाए

उदयपुर (वि)। एमपीयूएटी उदयपुर के माननीय कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र सिंह राठौड़ ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को ऑनलाइन संबोधित किया।

उन्होंने बताया कि लॉकडॉउन के बाद हम 17 मई तक तीसरे और संशोधित लॉक डाउन का पालन कर रहे हैं हालांकि हमारे देश में अनेक पश्चिमी देशों और अमेरिका की तुलना में कोरोना महामारी से बचाव के लिए बेहतर प्रयास किए गए हैं जिसके लिए हमारी सरकार, स्वास्थ्य कर्मी, सुरक्षाकर्मी एवं सफाई कर्मियों ने अतुलनीय एवं प्रशंसनीय योगदान दिया है।

उन्होंने कहा कि हमें सरकार द्वारा निर्देशित नियमों का अक्षरस: अनुपालन करना चाहिए। प्रोफेसर राठौड़ ने बताया कि इस लॉकडॉउन पीरियड के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा 4000 से अधिक मास्क तैयार किए जा रहे हैं जो कि विद्यार्थियों के आने पर उन्हें उपलब्ध कराए जाएंगे। उन्होंने नियमित शिक्षा एवं अनुसंधान तथा प्रसार कार्यों के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों का आभार व्यक्त किया तथा विद्यार्थियों से अपेक्षा की कि वे इस लॉकडॉउन पीरियड के दौरान अपनी कार्य दक्षता एवं सॉफ्ट स्किल्स को बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

Rashtradoot, 21/4/2020
sksprompuat

आगामी 3 मई तक जारी लॉकडाउन के दौरान धैर्य रखने की सलाह दी

उदयपुर,(कासं)। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. नरेंद्र सिंह राठौड ने सोमवार को जूम एप के माध्यम से विश्वविद्यालय कार्यक्षेत्र के 7 जिलो मे स्थित 8 कृषि विज्ञान केन्द्रों से जुडे अनेक किसान भाईयों, कृषि प्रसार अधिकारियों एवं अनुसंधान वैज्ञानिकों को विडियों विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से संबोधित किया।

अपने संबोधन मे उन्होने किसानो एंव कृषि अधिकारियों का उत्साह वर्धन करते हुए लॉकडॉउन के दौरान राज्य सरकार द्वारा जारी सलाह को अपनाते हुए स्वच्छता का ध्यान रखने, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने बेवजह घर से बाहर न निकलने खेत पर कार्य करते हुए एवं बाहर निकलने पर मास्क का उपयोग करने, बार बार साबुन से हाथ धोने एवं सेनिटाईजर से हाथ साफ करने, बार बार चेहरे पर हाथ न लगाने की सलाह दी। माननीय कुलपति डॉ. नरेंद्र सिंह राठौड ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को कोरोना विश्वमहामारी (कोविड-19) से देश को मुक्त करने के लिए आगामी 3 मई तक जारी लॉकडाउन के दौरान धैर्य अपनाने की सलाह दी। लॉकडाउन की अवधि में विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक विधियों, मोबाईल मैसेज व समाचार पत्रों के माध्यम से प्रदेश के विभिन्न जिलों मे किसानों को कृषि एवं मौसम सम्बन्धित सलाह सप्ताहिक रूप से दी जा रही है उन्होने किसानों से इसका पालन करने एवं अपनी समस्याओं के समाधान के लिए सम्बन्धित कृषि अधिकारियों से वार्ता करने की सलाह दी। उन्होने कहा कि राज्य सरकार एवं माननीय मुख्यमंत्री प्रदेश में कॉरोनो संक्रमण को फैलने से रोकने एवं किसान हित में चिंतित है तथा उन्होने अग्र सक्रियता दिखाते हुए इस दिशा मे विभिन्न कदम उठाए है। उन्होने कहा कि लॉकडाउन में शिथिलता प्रदान करते हुए राज्य सरकार ने 136 मुख्य कृषि मण्डियों, 296 उपकृषि मण्डिया एंव 14 फल सब्जी मण्डियों के साथ ही 500 ग्राम समितियों को भी गौण मण्डियों के रूप में कार्य करने एंव किसानों की उपज के विपणन हेतु सक्रियता से कार्य करने के आदेश दिए है।

उदयपुर में सात जिलो के शताधिक किसानों को कुलपति डॉ. नरेंद्र सिंह राठौड़ ने जूम एप के माध्यम से वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग से सम्बोधित किया।

सुखाड़िया यूनिवर्सिटी में आज से छुट्टियां घोषित, ऑनलाइन पढ़ाई जारी

एमपीयूएटी : सभी कोर्सों में जून से पहले ऑनलाइन पूरी होगी पढ़ाई, वैज्ञानिक एक लाख किसानों को दे रहे सलाह

टीचर्स पढ़ा रहे हैं और हम मॉनिटरिंग कर रहे हैं : कुलपति राठौड़

उदयपुर|कोरोना संक्रमण के चलते सबसे ज्यादा नुकसान स्कूल कॉलेज व प्रोफे शनल कोर्सों के स्टूडेंट्स को हुआ है। यहां सुखाड़िया यूनिवर्सिटी में सोमवार से छुट्टियां घोषित कर दी गई। परीक्षाएं स्थगित कर दी गई। यहां महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में संचालित प्रोफेशनल कोर्सों में ऑनलाइन पढ़ाई जारी है। दोनों ही विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एनएस राठौड़ से हमने लॉकडाउन को लेकर बातचीत की। पढ़िए...उनसे बातचीत के प्रमुख अंश...।

टीचर्स बच्चों को पढ़ा रहे हैं, प्रैक्टिकल बाद में होंगे

स. उच्च शिक्षा पर क्या असर?

जवाब : टीचर्स ऑनलाइन पढ़ा रहे हैं। जून से पहले कोर्स पूरा हो जाएगा। प्रैक्टिकल बाद में होंगे। जून के फर्स्ट वीक में हम परीक्षा करवाने की स्थिति में होंगे।

कृषि वैज्ञानिक किसानों को दे रहे हैं सलाह

स. किसानों की जिम्मेदारी पर?

जवाब : कृषि विज्ञान केंद्रों के जरिये हम किसानों को सलाह दे रहे हैं। किसान व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़े हैं। वैज्ञानिक खेतों में भी जा रहे हैं।

फार्म हाउसों पर काम हो रहा है, नियमों का पालन भी

स. फार्म हाउस कैसे मेंटेन होंगे?

जवाब : हमारे फार्म हाउसों पर काम हो रहा है। किसान और वैज्ञानिक सोशल डिस्टेंसिंग मैंटेन करते हुए फसलों व फलों की देखभाल कर रहे हैं।

अधीक्षण अभियंता।

क्षेत्र में बिजली बंद रहेगी।

Dainik Navjyoti
19.4.2020

एडवाइजरी के आधार पर करवा रहे कृषि

कृषि विद्यार्थी किसानों की कर रहे मदद

सोशल रिस्पोंसिबिलिटी के तहत उठाया कदम, बनाई एडवाइजरी चैन

ब्यूरो नवज्योति। उदयपुर

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एमपीयूएटी) के एग्रीकल्चर स्टूडेंट्स भी कोरोना महामारी और लॉकडाउन में सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसमें स्टूडेंट्स अपने अपने जिलों में रहते हुए एमपीयूएटी की तरफ से जारी एग्रीकल्चर एडवाईजरी की बारीकियां और पूर्वानुमान के आधार पर किसानों को अपडेट कर रहे हैं। स्टूडेंट्स इस कंसेप्ट को ऑनलाइन अपना रहे हैं। एमपीयूएटी की तरफ से जारी होने वाली एडवाईजरी को सभी स्टूडेंट्स तक पहुंचाया जा रहा है, तो स्टूडेंट्स अपने जिले में ऑनलाइन एवं अन्य माध्यम से प्रसारित भी करवा रहे हैं। इस प्रसारित एडवाईजरी में एमपीयूएटी के कृषि वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों के साथ जिले के संबंधित स्टूडेंट का नंबर भी होता है। जिससे स्थानीय किसान सीधे संपर्क भी कर सकते हैं। एमपीयूएटी के शोध प्रतिनिधि पीयूष चौधरी ने बताया कि कोरोना महामारी के चलते इस कंसेप्ट को अपनाया गया है। कई बार किसानों की तरफ से बुवाई-कटाई एवं स्टोरेज को लेकर ऐसे कई प्रश्न आ जाते हैं, जो स्टूडेंट्स और शोधार्थी की समझ से परे होते हैं। ऐसे में एमपीयूएटी के कृषि वैज्ञानिकों की मदद से उस समस्या का समाधान निकाला जाता है। इस कार्य के लिए एडवाईजरी चैन बनाई गई है। जिसमें प्रदेश के करीब करीब सभी जिलों का प्रतिनिधित्व है। इसमें भी टोंक, जयपुर, अलवर आदि जिलों में स्टूडेंट्स ज्यादा सक्रिय है।

पूर्वानुमान से मिल रही राहत

इस एडवाइजरी में कोरोना को लेकर किसानों को गाईडलाइन भी दी जा रही है तो दूसरी तरफ पूर्वानुमान भी जारी किया जा रहा है। जो किसानों के लिए ज्यादा प्रभावकारी साबित हो रहा है। चौधरी ने बताया कि बीते एक माह का मूल्यांकन किया गया है, इससे यह स्थिति स्पष्ट हुई है कि जयपुर, अलवर आदि जिलों में एमपीयूएटी की तरफ से जारी किए गए पूर्वानुमान को लेकर किसानों को खासी राहत भी मिली है। इससे नुकसान की स्थितियां कम हुई है।

नियमित हो एडवाइजरी चेन

शोध प्रतिनिधि पीयूष चौधरी ने बताया कि प्रदेश के विभिन्न जिलों में रह रहे एमपीयूएटी के स्टूडेंट्स ने इस एडवाइजरी चेन को मील का पत्थर बताते हुए कहा है कि इस चेन को नियमित किया जाए। ताकि, किसानों को सही समय पर मार्गदर्शन मिले और कृषि क्षेत्र में नुकसान की संभावनाओं को भी काफी हद तक घटाया जा सके।

Raj. Patrika, 19.4.2020

'मई का पाठ्यक्रम पूरा कर जून में करवाएंगे परीक्षाएं'

उदयपुर. महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. नरेंद्र सिंह राठौड़ ने जूम एप के माध्यम से विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि लॉकडॉउन के समय को एक सुअवसर में बदलें। राठौड़ ने कहा कि लॉकडाउन की अवधि में विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक विधियों से पाठ्यक्रम को पूर्ण करने का प्रयास किया जा रहा है। वे जूम, गूगल क्लासेज, वाट्सएप, डुओ व अन्य प्लेटफॉर्म्स से नियमित शिक्षण कार्य संपादित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ई-शिक्षण के माध्यम से मई में सिलेबस अनुसार प्रत्येक कोर्स को पूर्ण करेंगे तथा जून के प्रथम पखवाड़े में विश्वविद्यालय की परीक्षाएं आयोजित करने की स्थिति में होंगे। अध्ययन के अतिरिक्त रोचक और नवाचारों के साथ रचनात्मक गतिविधियों में समय बिताने की सलाह भी दी। सीटीएइ के कंप्यूटर विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. नवीन चौधरी के समन्वय में ऑनलाइन कक्षा लगाई गई। कुल सचिव श्रीमती कविता पाठक ने विश्वविद्यालय के सभी कार्यालय सोमवार से खोलने और शिक्षण के अलावा प्रसार व अनुसंधान कार्यों के निर्वहन के निर्देश दिए। इधर, सेंट्रल एकेडमी, सरदारपुरा ने छात्रों की पढ़ाई तथा सिलेबस के मद्देनजर ऑनलाइन (व्हाट्सएप ग्रुप) अध्यापन शुरू कर दिया है। प्रत्येक कक्षा के व्हाट्सएप ग्रुप पर गत सप्ताह से ही विद्यार्थियों को ऑनलाइन स्टडी तथा प्रोजेक्ट कार्य, वर्कशीट व ऑनलाइन वीडियो से अध्यापन करवाया जा रहा है। विद्यार्थियों की घर बैठे कक्षाएं चल रही हैं।

7:53 AM

epaper.navajyoti.net/view/1

शर्मा उपस्थित थे।

एमपीयूएटी के कुलपति स्टूडेंट्स से रूबरू हुए

उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कुलपति प्रो. एनएस राठौड़ ने शनिवार को जूम एप से संगठक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों से बातचीत की। उन्होंने लॉकडाउन के समय को सुअवसर में बदलने की प्रेरणा दी। प्रो. राठौड़ ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को कोरोना से देश को मुक्त करने के लिए आगामी 3 मई तक जारी लॉकडाउन के दौरान धैर्य के साथ अपने घर पर रह कर संक्रमण को रोकने और समय समय पर सरकार द्वारा प्रकाशित एडवाइजरी के पालन की सलाह दी। बताया गया कि कुलपति रविवार सुबह 11.30 बजे विवि के कर्मचारियों एवं अध्यापको को संबोधित करेंगे और सोमवार सुबह 11.30 बजे प्रदेश के किसानों एवं कृषि अधिकारियों को संबोधित करेंगे।

daipur city-epa...

Dainik Navjyoti
15/04/2020

एमपीयूएटी के विद्यार्थी ऑनलाइन कर सकेंगे पढ़ाई

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी घर पर रहकर ई-शिक्षण से पढ़ाई कर सकेंगे। विश्वविद्यालय ने यह सुविधा शुरू कर दी है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. नरेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर को उनकी जयंती पर नमन करते हुए कहा कि देश उनके योगदान का सदा ऋणी रहेगा।

डॉ. राठौड़ ने बताया कि लॉकडाउन की अवधि में विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक विधियों से पाठ्यक्रम को पूर्ण करने का प्रयास किया जा रहा है। वे जूम, गूगल क्लासेज, वाट्सएप, डुओ व अन्य प्लेटफॉर्म्स से नियमित शिक्षण कार्य संपादित कर रहे हैं। आपसे अपेक्षित है कि आप ई-शिक्षण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि ई-शिक्षण के माध्यम से हम मई माह के मध्य तक सिलेबस अनुसार प्रत्येक कोर्स को पूर्ण करेंगे तथा जून माह के प्रथम पखवाड़े में विश्वविद्यालय की परीक्षाएं आयोजित की जाएंगी। ई-शिक्षण के अतिरिक्त विद्यार्थी संबंधित अध्यापक से टेलीफोन पर वार्ता कर अपनी शंकाएं भी दूर कर सकते हैं।

कृषि विवि ने दिए 52.87 लाख

उदयपुर . एमपीयूएटी के कार्मिकों के मार्च के वेतन में से 52 लाख 87 हजार 474 रुपए की राशि मुख्यमंत्री कोविड राहत कोष में जमा करवाए गए हैं। कुलपति डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि कार्मिकों के वेतन भुगतान से निर्धारित मापदण्डों के अनुसार राशि कटौती कर राशि राजकोष में जमा करवाई है। इसके अलावा विवि शोध छात्रों ने भी राहत कोष में राशि दी है।

Rajasthan Patrika, 21 April, 2020
sksprompuat

कुलपति राठौड़ ने वीडियो कांफ्रेंसिंग से सात जिलों के किसानों से की बातचीत

उदयपुर| एमपीयूएटी के कुलपति एनएस राठौड़ ने सोमवार को 7 जिलों के कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़े किसानों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए बातचीत की। कांफ्रेंसिंग में किसानों के साथ ही कृषि प्रसार अधिकारी और अनुसंधान वैज्ञानिकों भी शामिल थे। कुलपति राठौड़ ने अपने संबोधन में सरकार से जारी आदेशों की पालना करने की बात कही। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन में शिथिलता देते हुए राज्य सरकार ने 136 मुख्य कृषि मण्डियों, 296 उपकृषि मंडियां और 14 फल सब्जी मंडियों के साथ ही 500 ग्राम समितियों को भी गौण मंडियों के रूप में कार्य करने के आदेश दिए हैं। इसका लाभ उठाकर किसान समय पर अपनी उपज का विपणन कर सकेंगे। विवि के वित्त नियंत्रक डॉ. संजय सिंह ने बताया कि विवि के सभी कार्मिको के मार्च के वेतन में से 52 लाख 87 हजार 474 रुपए मुख्यमंत्री कोविड राहत कोष में जमा करवाए हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के शोध छात्रों ने भी 62,221 रुपए राहत कोष में जमा करवाए हैं।

इधर रिलायंस फाउंडेशन और कृषि विज्ञान केंद्र बड़गांव ने सोमवार को जिले के किसानों से फोन पर डायलाउट ऑडियो कांफ्रेंस की। इसमें जिले के विभिन्न गांवों के किसानों को मोबाइल कांफ्रेंस से जोड़कर पशु विशेषज्ञ प्रफुल्ल भटनागर ने पशुओं के खान-पान, उनसे जुड़ी बीमारियों से बचाव की जानकारी और समाधान बताए। इसमें रिलायंस फाउंडेशन प्रतिनिधि कुशल कुआठिया ने सहयोग किया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, बुधवार, 25 मार्च, 2020
patrika.com
पत्रिका

कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की सहायता

मदद को आए आगे, एक दिन का वेतन देंगे

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

SKS PRO MPUAT

उदयपुर. कोराना वायरस महामारी को नियंत्रण के लिए राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन उदयपुर शहर की ओर से एक दिन का वेतन मुख्यमंत्री सहायता कोष मे जमा कराया जाएगा। एसोसिएशन जिलाध्यक्ष सत्यवीर सिंह तंवर ने बताया कि नर्सेज कोरोना वायरस महामारी से निपटने के लिये तैयार हैं। जिला कलक्टर सहित आरएनटी मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल व एमबी हॉस्पिटल अधीक्षक डॉ. आर एल सुमन को ज्ञापन देकर यह सूचना दी गई। ज्ञापन देने वालों में अध्यक्ष तंवर, कार्यकारिणी अध्यक्ष हंसराज मीणा, सचिव अमीन खान पठान, कोषाध्यक्ष प्रदीप मेहता सहित कई सदस्य मौजूद थे।

एमपीयूएटी के कर्मचारी भी आए आगे : महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कार्मिक भी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के आह्वान और कुलपति डॉ. नरेंद्रसिंह राठौड़ की अपील पर एक दिन का वेतन देंगे। वित्त नियंत्रक डॉ. संजय सिंह ने बताया कि विवि के उच्चाधिकारियों, शिक्षकों, शैक्षणेत्तर कर्मचारी संघ से चर्चा कर एक दिन का वेतन देने की अपील की गई है। मार्च के वेतन से लगभग 17 लाख रुपए सहायता कोष में भेजने का निर्णय लिया गया है।

सहमति नहीं देने वालों का नहीं कटेगा एक दिन का वेतन

उदयपुर. कोरोना महामारी में सरकार के खजाने में सहायता राशि उनकी नहीं ली जाएगी, जिन्होंने इसके लिए सहमति नहीं दी है। उन्हें छोड़कर बाकी लोगों की मदद जमा की जाएगी। इस लेकर माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने निर्देश जारी कर दिए हैं। प्रदेश में माध्यमिक और प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के सभी आहरण-वितरण अधिकारियों को निदेशक सौरभ स्वामी ने मंगलवार को जारी निर्देश में कहा कि कोविड-19 से संक्रमित लोगों की मदद के लिए उन्हीं राजकीय कर्मचारियों-अधिकारियों के मार्च माह के वेतन से राशि काटकर निर्धारित मदों में जमा की जाए, जिन्होंने लिखित या मौखिक रूप से सहमति जताई है। निदेशक ने बताया कि कई कर्मचारी व शिक्षक संगठनों की ओर से प्रस्ताव प्राप्त हुए, लेकिन उनका पैसा नहीं काटा जाए, जिन्होंने असहमति जताई है। स्वामी ने निर्देश दिए कि की गई कटौती का पृथक से विवरण भी अंकित करें, जो वेतन विपत्र के साथ लगाया जाए। गौरतलब है कि प्रदेशभर में शिक्षकों के 25 सक्रिय संगठन, कर्मचारियों के तीन, अर्द्ध सरकारी कर्मचारियों समेत विभिन्न संगठनों के कुल सात लाख कर्मचारी हैं। राजस्थान शिक्षक संघ, राजस्थान शिक्षा सेवा प्राध्यापक संघ, अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ, राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय), राजस्थान अम्बेडकर शिक्षक संघ सहित कई संगठनों ने अलग-अलग प्रस्ताव सरकार को दिए, जिस पर असहमति उभरने के बाद निदेशालय को निर्देश जारी करने पड़े। इधर, पंचायती राज शिक्षक एवं कर्मचारी संगठन के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष शेर सिंह चौहान ने बताया कि हमने उदयपुर जिले में करीब डेढ़ हजार शिक्षकों की सहमति के बाद कटौती का प्रस्ताव दिया है।

एमपीयूएटी के पेंशनर भी देंगे कोरोना फंड मे एक दिन की पेंशन

इन पेंशनर्स को बीते 8 माह से नहीं मिली है पेंशन

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एमपीयूएटी) के पेंशनर भी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के आव्हान पर कोरोना महामारी से निबटने तथा जरूरतमंदों की मदद के लिए एक दिन की पेंशन मुख्यमंत्री सहायता कोष में देंगे। एमपीयूएटी पेंशनर संघ के अध्यक्ष डॉ. एसके भटनागर ने बताया कि मार्च की पेंशन से लगभग 10 लाख रुपए मुख्यमंत्री सहायता कोष में भेजने का निर्णय लिया गया है। पेंशनर एसोसिएशन के उपाध्यक्ष डॉ पीसी कंठालिया ने बताया की वर्तमान मे एमपीयूएटी मे 1150 पेंशनर हैं, जिनमे 148 महिलाएं विधवा पेंशनर भी हैं। डॉ भटनागर ने बताया की राज्य सरकार से एमपीयूएटी के पेंशनर को समय पर पेंशन उपलब्ध करवाने का अनुरोध भी किया गया है। उल्लेखनीय है की एमपीयूएटी मे विगत 8 माह की पेंशन भी बकाया चल रही है जिसके लिए राज्य सरकार से समय-समय पर मांग की जाती रही है। एमपीयूएटी के कुलपति डॉ नरेंद्र सिंह राठौड़ ने संकट की इस समय में विश्वविद्यालय के सभी पेंशनर साथियों द्वारा मुख्यमंत्री कोरोना सहायता फंड में सहयोग राशि देने के लिये आभार जताया है।

dainiknavajyoti.com दैनिक नवज्योति

एमपीयूएटी ने पहले ही दिन पेंशनर्स को दी राहत, एमएलएसयू में पेंडिंग बिलों पर काम

1100 पेंशनर्स के खातों में जमा करवाए 3.63 करोड़ रुपए

ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर। मॉडिफाइड लॉकडाउन में सोमवार को महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एमपीयूएटी) एवं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (एमएलएसयू) को खोला गया। एमएलएसयू में मार्च के पेंडिंग बिलों पर काम किया गया, जबकि एमपीयूएटी में पहले ही दिन विवि के करीब 1100 पेंशनर्स को राहत देते हुए उनके खातों में 3.63 करोड़ रुपए की राशि जमा करवाई गई। कुलपति प्रो. एनएस राठौड़ ने बताया कि वह राशि संबंधित पेंशनर्स के खाते में ही डलवा दी गई है। उधर, एमपीयूएटी के सभी कर्मचारियों ने मार्च के वेतन में से 52 लाख 87 हजार 474 रुपए की राशि मुख्यमंत्री कोविड राहत कोष में जमा करवाई है। राज्य सरकार के निर्देशानुसार सभी कार्मिकों के वेतन भुगतान से निर्धारित मापदंडों के अनुसार राशि की कटौती भी की गई है तथा 52 लाख 87 हजार रुपए से अधिक राशि राजकोष में जमा करवा दी गई है।

1.18 लाख किसानों को बताई बारीकियां : एमपीयूएटी के कुलपति प्रो. एनएस राठौड़ ने सोमवार को जूम एप से प्रदेश के 7 जिलों मे स्थित 8 कृषि विज्ञान केंद्रों से जुड़े 1.18 लाख किसानों को लॉकडाउन के चलते हार्वेस्टिंग एवं उनके बेचने से संबंधित बारीकियों को समझाया। कुलपति ने स्वच्छता का ध्यान रखने, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने बेवजह घर से बाहर न निकलने खेत पर कार्य करते हुए एवं बाहर निकलने पर मास्क का उपयोग करने, बार बार साबुन से हाथ धोने एवं सेनिटाइजर से हाथ साफ करने, बार बार चेहरे पर हाथ न लगाने की सलाह दी।

विद्यापीठ : सोशल डिस्टेंसिंग बनाकर करें काम : वीसी

राजस्थान विद्यापीठ के केंद्रीय कार्यालय में सोमवार को चुनिंदा कार्यकर्ताओं के साथ कार्यालय प्रारंभ हुआ। कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कार्यकर्ताओं से कहा कि केंद्र व राज्य सरकार के दिशा निर्देशों के अनुसार कार्य करना हमारा पहला कर्तव्य है। कार्यकर्ता अपने घर से ही मास्क पहन कर निकलेगा व दो पहिया वाहन पर एक ही व्यक्ति व कार में अन्य कार्यकर्ता को अपने साथ कार्यालय ला सकेगा। कार्यालय में आते व जाते हुए सेनिटाइजर का प्रयोग करेंगे।

उदयपुर
Rashtradoot
वर्ष : 27 , संख्या : 178 उदयपुर, गुरुवार 30 अप्रैल, 2020 प्रभात आर.जे. 7202

किसानों की सेवा में तत्पर है कृषि विज्ञान केन्द्र : कुलपति प्रो. राठौड़

विभिन्न जिलों के करीब 2 लाख किसानों को लाभान्वित किया

उदयपुर में कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसानों को सब्जियों एवं फलों की उन्नत पौध तैयार करके भी उपलब्ध करवा रहे हैं।

उदयपुर, (कासं)। वर्तमान में जहां एक ओर सम्पूर्ण देश में कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन है वहीं दूसरी ओर महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का प्रसार शिक्षा निदेशालय दक्षिणी राजस्थान के 7 जिलों में 8 कृषि विज्ञान केन्द्रों से जुड़ा हुआ है।

कुलपति प्रो. नरेन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि ऐसी विषम परिस्थितियों में भी विश्वविद्यालय के प्रसार वैज्ञानिक किसानों से निरन्तर सम्पर्क साधे हुए हैं। ये वैज्ञानिक किसानों से व्यक्तिगत रूप से मोबाईल, व्हाट्सप, समाचार पत्रों एवं वीडियो कॉलिंग के माध्यम से विभिन्न पहलुओं पर निरन्तर परामर्श सेवाऐं दे रहे हैं, जिससे विभिन्न जिलों के करीब 2 लाख किसानों को लाभान्वित किया गया है।

निदेशक, प्रसार शिक्षा डॉ. सम्पत लाल मून्दड़ा ने बताया कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा 20 अप्रेल को सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों से सम्बद्ध लगभग 40 किसान एवं प्रसार कार्यकर्ताओं को विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपनी वार्तालाप के माध्यम से कोरोना महामारी के चलते कृषि से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की जानकारियों से किसानों को अवगत कराया। वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसानों को कोरोना महामारी के मद्देनजर फसलों की कटाई, गहाई, भण्डारण एवं उनके विपणन, पशुओं के प्रबन्धन, फल एवं सब्जी मूल्य संवर्धन हेतु अपने परामर्श द्वारा उनके सुख-दुख के भागीदार बने हुए है। ये वैज्ञानिक आगामी फसलों की तैयारी हेतु उन्नत बीज, उर्वरक, रसायन एवं अन्य आवश्यक आदान उपलब्ध कराने में भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे हैं। प्रसार वैज्ञानिक, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा एवं राजसमन्द जिलों में कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से जिले की कृषि अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए सार्वजनिक, निजी और स्वैच्छिक क्षेत्रों द्वारा की गयी पहल के लिए कृषि तकनीकी के ज्ञान और संसाधन केन्द्रों के रूप में कार्य कर रहे है। सभी कृषि विज्ञान केन्द्र सोशल मीडिया के माध्यम से काश्तकारों को सब्जी उत्पादन के लिए विशेष रूप से प्रेरित करने में लगे हुए है ताकि उन्हें कुछ नकद प्राप्त हो सके इसके लिए ये केन्द्र इच्छुक किसानों को सब्जियों एवं फलों की उन्नत पौध तैयार करके भी उपलब्ध करवा रहे हैं।

प्रसार शिक्षा निदेशालय के वैज्ञानिकों द्वारा इस समय विभिन्न कृषि तकनीकियों पर बुकलेट, फॉल्डर, लीफलेट आदि तैयार किये जा रहे हैं जो कि प्रशिक्षणों के दौरान कृषकों को उपलब्ध करवाये जायेंगे।

घर से व्हाट्सएप ग्रुप पर पढ़ाई कर रहे कृषि कॉलेज के छात्र

भास्कर संवाददाता, भीलवाड़ा

कोरोना महामारी के कारण लॉक डाउन घोषित होने से सभी शिक्षण संस्थाएं बंद हैं। इसके बावजूद एग्रीकल्चर एग्रीकल्चर कॉलेज के सभी छात्र व्याख्याताओं के सहयोग से इन दिनों अपने-अपने घर से ही पढ़ाई कर रहे हैं। हालांकि प्रायोगिक कक्षाओं का अभाव अवश्य है। लेकिन सैद्धांतिक कक्षाएं डिजिटल टेक्नोलॉजी के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुंच रही हैं। एग्रीकल्चर कॉलेज के डीन डॉ. किशन जीनगर ने बताया कि इसके लिए सभी वैज्ञानिकों व व्याख्याताओं ने विद्यार्थियों के कक्षा अनुसार व्हाट्सएप ग्रुप बनाए। प्रत्येक दिन सेलेबस के आधार पर पढ़ाई करा रहे हैं। इसके साथ ही डॉ. जीनगर ने बताया कि जिन बच्चों के पास लैपटॉप या स्मार्टफोन है, उन्हें विश्वविद्यालय के आदेश के अनुसार 'जूम' ऐप के माध्यम से सीधे ही जुड़ कर लाइव प्रदर्शन पढ़ाई कराई जा रही है। कुछ विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र के होने से सीधे लिंक नहीं हो पा रहे हैं। उन्हें व्हाट्सएप के माध्यम से या वीडियो कॉलिंग से उनके सवालों के जवाब दिए जा रहे हैं। व्याख्याता डॉ. एलएस पंवार, डॉ. ओपी पारीक, डॉ. रविकांत शर्मा, डॉ. सुमित्रा दाधीच, डॉ. स्वाती गोयल, डॉ. राधेश्याम शर्मा एवं आशुतोष स्वर्णकार आदि विद्यार्थियों को लाभ पहुंचा रहे हैं।

6:42 PM
भीलवाड़ा हलचल
LISTEN(सुने)
By भीलवाड़ा हलचल

भीलवाड़ा हलचल। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आज विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के संक्रमण एवं लॉक डाउन को ध्यान में रखते हुए केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. सी. एम. यादव विडियो कॉन्फ्रेन्सिग के जरिये किसानों से रूबरू हुए। इस दौरान डॉ यादव ने बताया कि आज किस प्रकार सम्पूर्ण विश्व कोरोना जैसी जानलेवा महामारी से जूझ रहा है। आज हमें पृथ्वी पर बढ़ते हुए ग्लोबल वार्मिंग को रोकने तथा कोविड-19 के संकट के दौरान स्वयं की देखभाल एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए केन्द्र सरकार के आयुष मन्त्रालय द्वारा बताए गए उपायों को अमल में लाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। डॉ. यादव ने पशुपालकों को बताया कि वे अपने पशुओं को नियमित पौष्टिक आहार दे, चेहरे पर मास्क लगाकर पशु की देखभाल करें, शेड को साफ और स्वच्छ रखें, पशु के बीमार होने पर पशु चिकित्सक को दिखायें, यदि आप बीमार है तो पशु के पास न जायें, दूध निकालने से पहले और बाद में हाथ धोये तथा संग्रह केन्द्र पर दूध डालने के बाद लम्बे समय तक वहाँ न रहें।

केन्द्र के शस्य वैज्ञानिक डॉ. के. सी. नागर ने बताया कि लगभग फसल कटाई एवं थ्रेशिंग का कार्य लगभग समाप्त हो गया है। अतः किसान अपने उत्पादित अनाज का सुरक्षित भण्डारण करें और आगामी फसल बुवाई हेतु सामाजिक दूरी का निर्वहन करते हुए खेतों की गहरी जुताई करें।

*This content is licensed for personal use only, not for any comm

दैनिक भास्कर उदयपुर

एमपीयूएटी • रिसर्च प्रदर्शनी पर लगातार काम कर रहे वैज्ञानिक, क्योंकि संकट काल में सबसे जरूरी ही अनाज ही है

लॉकडाउन के बीच 9 प्रोजेक्ट में जरूरी फसलों की रिसर्च पर लगे 40 वैज्ञानिक, कारण- रुके तो दो-तीन साल पिछड़ जाएगी खेती

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

लॉकडाउन में जहां सब कुछ ठहर गया है, वहीं एमपीयूएटी में 40 कृषि वैज्ञानिक 9 परियोजना में चल रही गेहूं, चना, मेथी, चन्द्रसूर, असालिया, अफीम, भिंडी, टमाटर आदि फसलों की रिसर्च पर जुटे हुए हैं। कारण यह है कि अगर रिसर्च को एक साल भी रोका तो खेती 2-3 साल पीछे चली जाएगी। किसानों को जल्द अच्छी रिसर्च नहीं दे पाएंगे। खास बात यह है कि इन खरीफ फसलों की रिसर्च क्रॉप की एक स्टेज मार्च अंतिम और अप्रैल प्रथम सप्ताह में होने वाली थी। क्योंकि खरीफ फसलों की इसी समय कटाई होती है। लॉकडाउन भी उसी समय में लगा। एमपीयूएटी से सभी वैज्ञानिकों के प्रशासन से पास बनवाएं और वैज्ञानिकों ने आना शुरू किया। अभी अधिकतर रिसर्च क्रॉप की कटाई हो चुकी है और वैज्ञानिकों ने अपने आंकड़े जुटा लिए हैं।

खेती के कामों में इंतजार नहीं कर सकते

कृषि कार्य समय आधारित है और इसमें किसी प्रकार की देरी नहीं की जा सकती है। अगर देरी की तो दो-तीन साल पीछे चले जाएंगे। इसी कारण सभी वैज्ञानिक लगातार अपनी परियोजनाओं में लगे हुए हैं। श्रमिक कम मिलने पर भी टुकड़ों-टुकड़ों में काम किया गया और वैज्ञानिकों ने अपने आंकड़े जुटाए हैं।
अभय मेहता, अनुसंधान निदेशक, एमपीयूएटी।

दो साल पीछे कैसे जाएंगे ऐसे समझे

एमपीयूएटी अनुसंधान निदेशालय के जोनल डायरेक्टर डॉक्टर एसके शर्मा बताते हैं कि वैज्ञानिक अपने सर्टिफाइड बीज से खेतों पर प्रदर्शनियां लगाते हैं, यहां से बीजों का उत्पादन होने के बाद वह एजेंसियों को देते हैं। अगर किसी वैज्ञानिक ने बीजों की खेतों पर प्रदर्शनियां लगा रखी है और किसी कारणवश वह एक साल बीज की फसल नहीं ले पाया तो इस साल का उत्पादन और बजट गया। अगले साल फिर से प्रदर्शनियां लगाई जाएगी और फिर उत्पादन मिलेगा तब एजेंसियों को दिया जाएगा। दूसरा यह भी कि अगर किसी वैज्ञानिक को तीन साल का प्रोजेक्ट मिला है और बजट भी तीन साल का दिया गया। दो साल उसने बजट से राशि लेकर फसल पर रिसर्च की और आंकड़े भी जुटाए। तीसरे साल किसी कारणवश वह नहीं ले पाया तो बजट भी समाप्त होगा और एक साल गया। साथ ही अगले साल बजट मिलने की प्रोसेस में जाएगा। ऐसे देरी होती है। यह भी हो सकता है कि पूरी तरह से प्रोजेक्ट ही समाप्त हो जाए।

इन परियोजनाओं की फसलों पर कर रहे वैज्ञानिक रिसर्च

- अखिल भारतीय गेहूं और जौ समन्वित अनुसंधान परियोजना
- अखिल भारतीय औषधीय एवं सुगंधीय पौध समन्वित परियोजना : अफीम, अश्वगंधा, असालिया के लिए
- अखिल भारतीय जैविक खेती नेटवर्क परियोजना : गेहूं, मैथी, चना, टमाटर, बरसीम
- अखिल भारतीय समन्वित खरपतवार अनुसंधान परियोजना : गेहूं और सौंफ के लिए
- अखिल भारतीय मक्का अनुसंधान परियोजना : रबी, मीठी, बेबी कॉर्न, पॉप कॉर्न मक्का के लिए
- अखिल भारतीय समन्वित मूंगफली अनुसंधान परियोजना
- अखिल भारतीय समन्वित सूत्रकृमि अनुसंधान परियोजना
- अखिल भारतीय चना अनुसंधान परियोजना
- अखिल भारतीय शुष्क समन्वित अनुसंधान परियोजना : तारामीरा, चना, जौ, सब्जियां

और प्रशासनिक व्यवस्थाओं इन दोनों गांवों के हालात। बदल गया है वही मावली के थामला गां

पत्रिका की 'लॉकडाउन डायरीज' सीरीज में

लॉकडाउन की अवधि में लिख दी तीन पुस्तकें

नया अनुभव लेकर आया यह समय

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. लॉकडाउन के बीच दफ्तर हो या घर दोनों जगह से किसान और स्टूडेंट से जुड़ा हूं। बस ऑनलाइन सबकी मदद में और स्टाफ कर रहा है। लॉकडाउन नया अनुभव लेकर आया है। यह कभी सोचा नहीं था कि पढ़ाई में भी ऑनइलान इस स्तर पर काम हो सकेगा, लेकिन नित्य नए अपडेट के साथ पूरी टीम काम कर रही है। यह कहना है महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़ का। वे बताते हैं कि इन दिनों हमने ऑनलाइन सेटअप ठीक कर दिया है। किसानों को भी इसी प्लेटफॉर्म पर हम मदद कर रहे हैं और बच्चों को भी पढ़ा रहे हैं। मैं और डीन डायरेक्टर अभी विवि में आकर काम कर रहे हैं। सुबह घर की छत पर ही वॉक करता हूं और उसके बाद योगा। सुबह यूएस में अपनी बेटी से तो शाम को बेटे से नोएडा में वीडियो कॉल पर बात करते हैं। लॉकडाउन की अवधि में मैंने और साथी प्रोफेसरों ने तीन पुस्तकें लिख दी, मैंने उसे घर रहते हुए अभी उनको फाइनल रूप भी दे दिया। हमारे डीन और अन्य साथी करीब 4500 से ज्यादा मास्क बनवा रहे हैं। ये मास्क हम अपने स्टूडेंट को बांटेंगे। इस समय पढ़ाई के साथ-साथ स्टूडेंट को सोशल डिस्टेंस की पालना को लेकर भी प्रशिक्षित कर रहे हैं।

LOCK DOWN DIARIES

किसानों की सेवा में तत्पर है कृषि विज्ञान केन्द्र

उदयपुर। वर्तमान में जहां एक ओर सम्पूर्ण देश में कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन है वही दूसरी ओर महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर का प्रसार शिक्षा निदेशालय दक्षिणी राजस्थान के 7 जिलों में 8 कृषि विज्ञान केन्द्रों से जुड़ा हुआ है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरेन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि ऐसी विषम परिस्थितियों में भी विश्वविद्यालय के प्रसार वैज्ञानिक किसानों से निरन्तर सम्पर्क साधे हुए है। ये वैज्ञानिक किसानों से व्यक्तिगत रूप से मोबाईल, वॉट्सप, समाचार पत्रों एवं विडियो कॉलिंग के माध्यम से विभिन्न पहलुओं पर निरन्तर परामर्श सेवाऐं दे रहे है, जिससे विभिन्न जिलों के करीब 2 लाख किसानों को लाभान्वित किया गया है। निदेशक, प्रसार शिक्षा डॉ. सम्पत लाल मून्दड़ा ने बताया कि विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा 20 अप्रेल को सभी

कृषि विज्ञान केन्द्रों से सम्बद्ध लगभग 90 किसान एवं प्रसार कार्यकर्ताओं को विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपनी वार्तालाप के माध्यम से कोरोना महामारी के चलते कृषि से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की जानकारियों से किसानों को अवगत कराया।

वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसानों को कोरोना महामारी के मद्देनजर फसलों की कटाई, गहाई, भण्डारण एवं उनके विपणन, पशुओं के प्रबन्धन, फल एवं सब्जी मूल्य संवर्धन हेतु अपने परामर्श द्वारा उनके सुख-दुख के भागीदार बने हुए है। ये वैज्ञानिक आगामी फसलों की तैयारी हेतु उन्नत बीज, उर्वरक, रसायन एवं अन्य आवश्यक आदान उपलब्ध कराने में भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे हैं। प्रसार वैज्ञानिक, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, चितौड़गढ़, भीलवाड़ा एवं राजसमन्द जिलों में कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से जिले की कृषि अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए सार्वजनिक, निजी और स्वैच्छिक क्षेत्रों द्वारा की गयी पहल के लिए कृषि तकनीकी के ज्ञान और संसाधन केन्द्रों के रूप में कार्य कर रहे है।

सभी कृषि विज्ञान केन्द्र सोशल मिडिया के माध्यम से काश्तकारों को सब्जी उत्पादन के लिए विशेष रूप से प्रेरित करने में लगे हुए है ताकि उन्हें कुछ नकद प्राप्त हो सके इसके लिए ये केन्द्र इच्छुक किसानों को सब्जियों एवं फलों की उन्नत पौध तैयार करके भी उपलब्ध करवा रहे हैं।

प्रसार शिक्षा निदेशालय के वैज्ञानिकों द्वारा इस समय विभिन्न कृषि तकनीकीयों पर बुकलेट, फॉल्डर, लीफलेट आदि तैयार किये जा रहे हैं। जो कि प्रशिक्षणों के दौरान कृषकों को उपलब्ध करवाये जायेगें। इसी प्रकार वैज्ञानिकों द्वारा अनुसूचित उपपरियोजना के अन्तर्गत करीब 1 करोड़ रूपये की एक परियोजना कृषि विज्ञान केन्द्र, भीलवाड़ा, चितौड़गढ़ व राजसमन्द जिलों हेतु तैयार कर निदेशक, कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोधपुर को भिजवा दी गयी है। प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर इस वर्ष कौशल प्रशिक्षण आयोजित करने के लिये एक परियोजना भारतीय कृषि कौशल विकास को भिजवाई जा चुकी है। ग्रामिण कृषि मौसम सेवा स्कीम के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, चितौड़गढ़ एवं डूंगरपुर द्वारा समय-समय पर किसानों को मौसम आधारित परामर्श विभिन्न संचार के माध्यमों द्वारा उपलब्ध कराई जा रही है। उक्त केन्द्रों द्वारा वैश्विक महामारी कोरोना के नियंत्रण हेतु आरोग्य सेतु एवं किसानरथ एप से विभिन्न जिलों के लगभग 6 हजार किसानों को इससे जोड़ा गया है।

उदयपुर एक्सप्रेस, 30/4/2020